वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम.ए उत्तरार्द्ध परीक्षा

एमएएचडी-05

नाटक और कथेतर गद्य विधाएँ

अवधि 3 घंटे अधिकतम अंक 80

निर्देश : प्रश्न पत्र खण्ड अ, ब और स में विभाजित है। खण्ड 'अ' अतिलघूत्तरात्मक है, खण्ड 'ब' लघूत्तरात्मक एवं खण्ड 'स' में निबंधात्मक प्रश्न सम्मिलित हैं।

खण्ड ब

इस खण्ड में 8 प्रश्न सम्मिलित हैं। निम्नलिखित प्रश्नों में से कोई चार प्रश्न कीजिए। शब्द सीमा लगभग 100 से 150 शब्द है। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का है। 8 × 4 = 32

प्रश्न 1 निम्मलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए ?

राजा है, राज प्रतिनिधि है पर प्रजा की उन तक रसाई नहीं। सूर्य हैं, धूप नहीं। चन्द्र है, चांदनी नहीं। माई लार्ड नगर ही में है, पर शिवशशु उनके द्वार तक नहीं फरक सकता, उनके घर चलकर होली खेलना विचार हो दूसरा है। माई लार्ड के घर तक प्रजा की बात नहीं पहुच सकती। बात की हवा नहीं पहुँच सकती। जहाँगीर की भाँति उसने अपने शयनागार तक ऐसा कोई घंटा नहीं लगाया, जिसकी जंजीर बाहर से हिलाकर प्रजा अपनी फरियाद उसे सुना सके। न आगे को लगाने की आशा है। प्रजा की बोली वह नहीं समझता, उसकी बोली प्रजा नहीं समझती। प्रजा के मन का भाव वह नहीं समझता न समझना चाहता है। उसके मन का भाव न प्रजा समझ सकती है न समझने का कोई उपाय है। उसका दर्शन दुर्लभ है।

प्रश्न 2 निम्नलिखत गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

"इस प्रतीक्षा में एकाएक उसका दर्द उस ढलती रात में उभर आया और सोचने लगा आने वाली पीढी पिछली पीढी की ममता की पीड़ा नहीं समझ पाती और पिछली पीढी अपनी संतान के संभावित संकट की कल्पना मात्र से उद्विग्न हो जाता है। मन में यह प्रतीति हो नहीं होती कि अब संतान समर्थ है, बड़ा से बड़ा संकट झेल लेगी।

प्रश्न 3 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

मेरा सुझाव माना जाता तो मैं झांकी में झूठे मास्टर रोल भरते दिखाता। चुकारा करने वाले का अंगूठा हजारों मूर्खो के आग लगवाता, नेता, अफसर, ठेकेदार के बीच लेनदेन का दृश्य दिखाता। पिछले साल स्कूलों की टाट-पट्टी काण्ड से हमारा राज्य मशहूर हुआ है मैं पिछले साल की दृश्य दिखाता। मन्त्री, अफसर वगैरह खडे है। और टाट-पट्टी खा रहे है।

प्रश्न 4 'प्रसाद के नाटको में एक अतीत जीवित बोल रहा है और वर्तमान के प्रति उसमें एक सन्देश हैं 'चन्द्रगुप्त से उदाहरण देकर इस कथन की परीक्षा कीजिए।

प्रश्न 5 धर्मवीर भारती के नाटकों के आधार पर उनकी नाटय दृष्टि की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 6 "राकेश के नाटको में स्त्री पात्र पर्याप्त महत्वपूर्ण है राकेश के नाटकों के आधार पर इस कथन को समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 7 हिन्दी गद्य के विकास को समझाते हुए कथेतर विधा के क्षेत्र में भारतेन्दु-युग के योगदान को रेखांकित कीजिए।

प्रश्न 8 'ठिठुरता हुआ गणतन्त्र में लेखक ने समय, समाज, सत्ता और व्यवस्था की किन-किन विसंगतियों पर प्रकाश डाला है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए?

प्रश्न 9 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

लोक में फैली दुख की छाया हटाने में ब्रम्हा की आनन्द कला जो शक्तिमय रूप धारण करती है उसकी भीषणता में भी अदभुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी आर्द्रता साथ लगी रहती है। विरूद्धों का यही सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौन्दर्य है जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता। इस सामंजस्य का और कई रूपों में भी दर्शन होता है। भिषणता और सरसता कोमलता और कठोरता, कटुता और मधुरता, प्रचंडता और मृदता का सामंजस्य ही लोकधर्म का सौन्दर्य है।

प्रश्न 10 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। दिन भर इन चोटियों पर, पीले या सलेटी रंग के बादलों का मेला लगा रहता है 'पाउडर-पफ सा हर बादल हवा में तिरता हुआ अपने सुनहर पंखों से इस 'मोजायक को पोंछ जाता है।

प्रश्न 11 हिन्दी रंगमंच के विकास में भारतेन्दु के महत्व की रेखांकित कीजिए।

प्रश्न 12 हिन्दी नाटक के विकास पर एक लेख लिखिये।

प्रश्न 13 प्रसाद के प्रौढ़ रचनाकाल के नाटकों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न 14 'चन्द्रगुप्त नाटक में बहिर्द्वन्द्व और अन्तर्द्वन्द्व के समन्वय का परिचय देकर उसके चरित्र शिल्प पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 15 अंधा युग की आधुनिकता की चर्चा कीजिए।

प्रश्न 16 मानवीय संम्बन्धों की अति संवेदनशीलता इस नाटक को समस्या नाटक बनाती है-स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 17 निम्नलिखित गद्यांश की संप्रसग व्याख्या कीजिए।

परन्तु काम चाहे कैसा ही कठिन हो, शरीर चाहे कितना ही क्लान्त रहा हो, मैंने न कभी उसकी हँसी से आभासित मुख-मुद्रा में अन्तर पड़ते देखा और न कभी काम रूकते देखा। और उतने काम में भी उस अभागी का दिन द्रोपदी के चीर से होड़ लेता था। सवेरे स्नान, तुलसी-पूजा आदि में कुछ समय बिताकर ही वह अपने अंधेरे रसोईघर में पहुँचती थी परन्तु दस बजते-बजते ससुर को खिला-पिला कर उस टाट के परदे से मुझे शाम को आने का निमन्त्रण देने के लिए स्वतन्त्र हो जाती थी। उसके बाद चौका-बर्तन कूटना-पीसना भी समाप्त हो जाता था , परन्तु तब भी दिन का अधिक नहीं तो एक प्रहर शेष रह है जाता था। दुकान की ओर जाने का निषेध होने के कारण वह अवकाश का समय उसी टाट के परदे के पास बिता देती थी, जहा से कुछ महानों के पिछवाड़े और एक दो आते-जाते व्यक्ति ही दिख सकते थे, परन्तु इतना ही उसकी चंचलता का ढिंढोरा पीटने के लिए पर्याप्त था।

प्रश्न 18 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

इधर कई-एक साहित्यिकारों की जन्म शताब्दियाँ मनाई गई है। और लगभग प्रत्येक के साथ विरासत का प्रश्न बड़े विकृत रूप में उठाया गया हैं, मानो हम अपने को परम्परा में जोड़ने की बात ने सोचकर परम्परा को अपने एकाधिकार में ले लेना चाहते हों। विचित्र बात

है कि साहित्यिकारों को अपनी-अपनी सम्पत्ति सिद्ध करने की यह प्रवृत्ति उन्हीं लोगो में अधिक है जो दूसरे क्षेत्रों में सम्पत्ति के अधिकार के विरोध की बात करते हैं।

प्रश्न 19 आकाश में हवाई जहाज नहीं थे और न बम ही। गिर रहे थे। किन्तु चारों तरफ आग दहक रही थी, जिससे लपटों की जगह कंकाल उठ रहे थे, जिसमें औरतों का सतीत्व भस्म हो रहा था। वह आग एक प्राचीन संस्कृति को भून रही थी।

प्रश्न 20 हिन्दी नाटकों के विकास में भारतेन्दु तथा द्विवेदी युगीन नाटकों का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 21 प्रसाद के नाटय साहित्य का परिचयात्मक विवरण प्रस्तु करके 'चन्द्रगुप्त का स्थान निर्धारित कीजिए।

प्रश्न 22 गीतिनाटय की दृष्टि से 'अंधायुग का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 23 एंकाकी कला के आधार पर 'नीली झील की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 24 'आधे-अधूरे नाटक के नाट्य शिल्प पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 25 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए।

समाजवाद परेशान है, उधर जनता भी परेशान है। समाजवाद आने को तैयार खड़ा है, मगर समाजवादियों में आपस में धौल-धप्पा हो रहा है। समाजवाद एक तरफ से उतरना चाहता है कि उसे पत्थर पड़ने लगते है, खबरदार उधर सेमत जाना। एक समाजवादी उसका एक हाथ पकड़ता है तो दूसरा हाथ पकड़ कर उसे खींचता हैं। तब बाकी समाजवादी छीना-झपटी करके हाथ छुड़ा लेते है। लहुलुहान समाजवाद टीले पर खड़ा है

प्रश्न 26 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए।

उसने निराशा से सिर हिलाया। औरत मुस्करा उठी। बोली नहीं बचेगा? कोई क्या करे? तुम कोई भगवान तो हो नहीं। तुम्हारा क्या कसूर है? मरे तो मर जाये। क्या कर सकती हूँ? छोड़ जाने का यह भी एक अच्छा तरीका हैं। और वह हँस पड़ी। उसकी हँसी में एक व्यथा के इतिहास का व्यंग्य छलछला आया और स्वर झनझनाकर बिखर गये।

प्रश्न 27 हिन्दी रंगमंच के विकास में लोक नाट्य शैलियों के प्रभाव की समीक्षा कीजए?

प्रश्न 28 हिन्दी नाटकों के विकास में जयशंकर प्रसाद के योगदान पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

प्रश्न 29 धर्मवीर भारती के नाटकों के आधार पर उनकी नाटय दृष्टि की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 30 अंधायुग के कथानक को संक्षेप में लिखिये।

प्रश्न 31 'आधू-अधूरे नाटक का मूल प्रतिपाद्य क्या है? उसके मनोवैज्ञानिक स्वरूप् का विश्लेषण कीजए।

प्रश्न 32 'आत्मकथा को परिभाषित करते हुये आत्मकथा के विकास एवं प्रमुख आत्मकथाओं का परिचय दीजिए।

प्रश्न 33 प्रश्न के स्वर से और पूछने के ढ़ंग से मैं एक तरफ बैठा भी तिलामिला गया प्रेमचन्द भी एक छोटे क्षण के लिए सकते में आ गये थे, लेकिन तुरन्त संभलते उन्होंने संयत स्वर में कहा, 'एक क्यों मैं तो दोनों पैर कब्र में लटकाये बैठा हूँ, फिर भी कहता हूँ कि साधना का बड़ा महत्व होता है और बात पूरी करके उन्होंने अपनो प्रसिद्ध कहा कहा लगाया कि गूँज आज भी कभी-कभी उनके दोनों बेटों-श्रीपत राय और अमृतराय की हँसी में सुनाई दे जाती है स्पष्ट था कि इस बीच प्रश्न की बदतमीजी पर उन्होंने पूरी तरह विजय पा ली है।

प्रश्न 34 पहाड़ों पर चाँदनी का यह अदभुत मायाजाल मैंने पहली बार देखा था और एक अलौकिक विस्मय से मेरी आखे मुँद गयी थीं। उस रात मुझे लगा था कि पहाड़ों में भी साँप का आख जैसा एक अविस्मृत, जादुई सम्मोहन होता है

प्रश्न 35 "अंधायुग के पात्र प्रतीकात्मक और मनोवेज्ञानिक रंगत लिए हुये है उपयुक्त उदाहरणों सहित इस कथन की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 36 "राकेश के नाटकों में स्त्री पात्र पर्याप्त महत्वपूर्ण हैं। राकेश के नाटकों के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 37 आधे-अधूरे नाटक में शिल्पगत नवीन आयामों का विवेचन कीजिए।

प्रश्न 38 हिन्दी निबन्ध के विकास की पृष्टभूमि पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 39 अशोक के फूल का भाषिक-सौन्दर्य निरूपित कीजिए।

प्रश्न 40 हिन्दी व्यंग्य निबन्धों में 'ठिठुरता हुआ गणतन्त्र क्यों विशेष है? सोदाहरण स्पष्ट कजिए।

प्रश्न 41 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

'उत्कर्ष की ओर उन्मुख समष्टि का चैतन्य अपने ही घर से बाहर कर दिया गया, उत्कर्ष की मनुष्य की ऊर्धोन्मुखी चेतना की यही कोमल सनातन काल से अदा की जाती रही है। इसलिए जब कीमत अदा कर दी गई तो उत्कर्ष कम से कम सुरक्षित रहे यह चिंता स्वाभाविक हो जाती है। राम भीगें तो भीगें, राम के उत्कर्ष की कल्पना न भीगे, वह हर बारिश में, हर दुदिन से सुरक्षित रहे। नर के रूप में लीला करने वाले नारायण निर्वासन की व्यवस्था झेले पर नर रूप में उसकी ईश्वरता का बोध दमकता रहे, पानी की बूंदों की झालर से उसकी दीप्ति छिपने न पाये।

प्रश्न 42 निम्नलिखित गधांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

न जाने कितने दु:खों के बीच से होकर उन्होंने यह सुख पाया था। दोनों न जाने कितनी-कितनी देर तक बातें करते रहते। एक-दूसरे की आँखों में झाकते रहते। दफ्तर के मित्रों ने उसे स्त्रैण कहना शुरू कर दिया, लेकिन उसने किसी बात की चिन्ता नहीं की। मिस्त्री पल्ली के लोग पुकारते तभी वह होमियोपैथी का बक्स उठाकर बाहर निकलता। या फिर कभी अध्ययन लेखन की प्रेरणा होती तो नयी अनुभूति के साथ साधना में लग जाता नही तो उसका संसार शान्ति में सीमित होकर रह गया था।

प्रश्न 43 हिन्दी नाटक के विकास में प्रसाद के योगदान को रेखांकित कीजिए।

प्रश्न 44 प्रसाद के प्रौढ़ रचनाकाल के नाटको का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न 45 चन्द्रगुप्त नाटक की कथावस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डालिये।

प्रश्न 46 अंधायुग की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

प्रश्न 47 गीतिनाटय के रूप में 'अंधायुग की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 48 'आधे-अधूरे रंगमंच की दृषिट से आपकी नजर में कैसी रचना है ?

प्रश्न 49 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

कमलापति धवल-नवल वस्त्र धारण कर माथे में भस्मी लगाए स्कूल आते। मैं जाता हीन-दीन मलीन कपडे पहने-धूल उडती चेहरे पर। मुझमें और कमलापति में ऐसा कोई साम्य न था कि हम मिलते। वह तुंग हिमालय-श्रृंग, में धूलि धँसी धरती की।

प्रश्न 50 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उसका सारा जीवन एक यात्रा ही था। एक निरूद्वेश्य यात्रा एक बार फिर वह घूमने निकल गया। लेकिन अब पहले की तरह मुक्त नहीं था। छुट्टी की एक सीमा होती है, आखिर उसे आने काम पर लौटना पडा। फिर दर्द सहा जाता है, प्रचारित नहीं किया जाता, तभी तो वह शक्ति बनता है, इसलिए अध्ययन लेखन, चित्रांकन सब कुछ फिर आरम्भ हो गया। उस दर्द ने उन्हें गहराई दी और दी विशालता, लेकिन उस घर मे वह नहीं रह सका। उसके कण-कण में उसके अल्पकालिक दाम्पत्य जीवन की स्मृति अंकित थी। पास ही एक और घर लेकर वह उसमें चला गया।

प्रश्न 51 हिन्दी रंगमंच के विकास में लोक नाटयशैलियों के प्रभाव की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 52 हिन्दी नाटक के विकास पर एक लेख लिखिए।

प्रश्न 53 प्रसाद के नाटयकला की प्रमुख विशेषताओं का उदघाटन कीजिए।

प्रश्न 54 हिन्दी गीति नाटय परम्परा में 'अंधायुग का स्थान निर्धारित कीजिए।

प्रश्न 55 हिन्दी के निबन्ध के विकास की पृष्टभूमि पर प्रकाश डालिये।

प्रश्न 56 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में जिन पूर्णत: विदेशी कथेतर विधाओं का आगमन हुआ है उनका परिचय दीजिए।

प्रश्न 57 निम्नलिखित गधांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

मेरा सुझाव माना जाता तो मै झांकी में झूठे मास्टर रोल करते दिखाता। चुकारा करने वाले का अंगूठा हजारों मूर्खों के आगे लगवाता, नेता, अफसर, ठेकेदार के बीच लेनदेन का दृश्य दिखाता। पिछले साल स्कूलों की टाट-पट्टी काण्ड से हमारा राज्य मशहूर हुआ है मै पिछले साल की झाकी में यह दृश्य दिखाता। मन्त्री, अफसर बगेरह खडे. है और खाद्दी खा रहे है।

प्रश्न 58 निम्नलिखित गधांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

भाभी को तो सफेद ओढने और काला लहँगा या काली ओढनी और सफेद बूटीदार कत्थई लहँगों पहने हुए ही मैंनें देखा था पर उसकी ननद के लिए हर तीज त्योहार पर बडे सुन्दर रंगीन कपडे बनते थे। कुछ भाभी की बटोरी हुई कतरन से और कुछ अपने घर से लाए हुए कपडो से गुडियों के लज्जा-निवारण का सुचारू प्रबन्ध किया जाता था। भाभी घाघरा, काचली आदि अनेक वस्त्र सीना जानती थी, अत: मेरी गुडिया मारवाडिन की तरह श्रृंगार करती थी, मैनें स्कूल में ढीला पाजामा और घर में कालीदार कुरता सीना सीखा था, अत: गुड्डा पूरा लाला जान पडता था, चौकोर कपडे टुकडे के बीच छेद करके वही बच्चों के गले में डाल दिया जाता था, अत: वे किसी आदिय युग की संतान से लगते थे।

प्रश्न 59 हिन्दी नाट्य के विकास में भारतेन्दु तथा द्विवेदी युगीन नाटकों का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 60 प्रसाद के नाटकों में एक अतीत जीवित बोल रहा है और वर्तमान के प्रति उसमें एक सन्देश है। चन्द्रगुप्त से उदाहरण देकर इस कथन की परीक्षा कीजिए।

प्रश्न 61 धर्मवीर भारती के नाटकों के आधार पर उनकी नाटय दृष्टि की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 62 अंधायुग के कथानक को संक्षेप में लिखिये।

प्रश्न 63 गीतिनाटय के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुये उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिये।

प्रश्न 64 निर्मल वर्मा की चित्रात्मक भाषा को उदाहरण देकर समझाइये।

प्रश्न 65 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उस देश में जो जिसके लिए प्रतिबद्ध है, वही उसे नष्ट कर रहा है। लेखकीय स्वतंत्रता के लिए प्रतिबद्ध लोग ही लेखक की स्वतंत्रता छीन रहे है। सहकारिता के लिए प्रतिबद्ध इस आन्दोलन के लोग ही सहकारिता को नष्ट कर रहे है। सहकारिता तो एक सिपरिट है। सब मिलकर सहकारिता पूर्वक खाने लगते है और आन्दोलन की नष्ट कर देते है। समाजवाद को समाजवादी ही रोके हुये है।

प्रश्न 66 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

फिर तो हम लोग इन्दौर से चले ही आये और एक-एक करके अनेक वर्ष बीत जाने पर ही मै इस योग्य बन सकी कि उसकी कुछ खोज खबर ले सकूं। पता लगा कि छोटी दुकान के स्थान में एक विशाल अटटालिका वर्षो पहले खडी हो चुकी है। पता चला कि वधू की रक्षा का भार संसार को सौपकर वृद्ध कभी के विदा हो चुके है परन्तु कठोर संसार ने उसकीकैसी रक्षा की यह आज तब अज्ञात है, इतने बडे मानव समुद्र में उस छोटे से बुदबुद की क्या स्थिति हुई होगी यह मैं जानती हुँ परन्तु तब भी कभीकभी मन चाहता है कि बचपन में जिसने अपने जीवन के सूनेपन को भूलकर मेरी गुडियों की गृहस्थी बसाई थी, खिलौनों का संसार सजाया था, उसे एक बार पा सकती।

प्रश्न 67 प्रसाद नाट्य साहित्य का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करके 'चन्द्रगुप्त का स्थान निर्धारित कीजिए।

प्रश्न 68 एकांकी कला के आधार पर 'आवाज का नीलाम एकांकी की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 69 'अधांयुग के कथानक को संक्षेप में लिखिये।

प्रश्न 70 'राकेश अपने युग और आस-पास के वातावरण से बहुत गहराई के साथ जुडे थे इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

प्रश्न 71 'आधे-अधूरे नाटक के वैचारिक पक्ष की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 72 हजारी प्रसाद द्विवैदी और अज्ञेय के निबन्धों की विशेषताएँ बताइये।

उत्तर-तालिका, खंड ब

प्रश्न 1 बालमुकन्द गुप्त द्वारा रचित 'एक दुराशा निबन्ध से

प्रश्न 2 विधानिवास मिश्र कृत मेरे राम का मुकुट भीग रहा है निबन्ध से

प्रश्न 3 'हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'ठिठुरता हुआ गणतन्त्र व्यंग्य से,

प्रश्न 9 रामचन्द्र शुक्ल कृत "काव्य मे लोकमंगल की साधनावस्था

प्रश्न 17 महादेवी वर्मा कृत 'भाभी रेखाचित्र से

प्रश्न 18 अज्ञेय कृत संस्मरण 'प्रेमचन्द से

प्रश्न 19 रांगेय राघव कृत रिपोर्ताज 'अंधकार से

प्रश्न 25 हरिशंकर परसाई कृत 'ठिठुरता हुआ गणतन्त्र

प्रश्न 26 रिपोर्ताज अंधकार, लेखक रांगेय राघव

प्रश्न 33 अज्ञेय कृत संस्मरण 'प्रेमचन्द

प्रश्न 34 निर्मल वर्मा कृत 'चीड़ो पर चाँदनीं यात्रावृत्तान्त से

प्रश्न 41 पं विधानिवास मिश्र कृत 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है।

प्रश्न 42 विष्णु प्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा (जीवनी) से

प्रश्न 49 पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र कृत 'अपनी खबर' (आत्मकथा) से

प्रश्न 50 विष्णु प्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' (जीवनी) से

प्रश्न 57 हरिवंश परसाई कृत 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र से

प्रश्न 58 महादेवी वर्मा कृत 'भाभी रेखाचित्र से

प्रश्न 65 हरिशंकर परसाई कृत ठिठुरता हुआ गणतंत्र से

प्रश्न 66 महादेवी वर्ता कृत भाभी रेखाचित्र से